अष्टावक्र

अष्टावक्र, विद्वान वेदपाठी एवं प्रकांड पंडित कहोड़ तथा ऋषि उद्यालक की पुत्री सुजाता की संतान थे। जब से वे अपनी मां के गर्भ में थे, तभी से उनके पिता उन्हें शास्त्रों का ज्ञान देते थे परंतु एक दिन अष्टावक्र ने गर्भ से ही अपने पिता को कहा कि असल में ज्ञान तो मनुष्य के भीतर ही है, शास्त्र तो केवल शब्दों का संग्रह मात्र हैं। यह सुन उनके पिता अत्यंत क्रोधित हो गए और उन्हें शाप दिया कि जन्म से ही उनके आठ अंग टेढ़े होंगे। ठीक ऐसा ही हुआ और ऋषि कहोड़ की संतान जन्म से ही आठ अंगों से टेढी थी, इसलिए उनका नाम अष्टावक्र रखा गया। क्योंकि अष्टावक्र बालपन से ही विकलांग थे व सभी लोग उन्हें कुरूप मानते थे, इसलिए उनका हमेशा से ही उपहास किया जाता था।

एक दिन मिथिला नरेश, राजा जनक ने अपनी सभा में विशाल शास्त्रार्थ का आयोजन किया। सभी प्रकांड पंडितों सहित शास्त्रों में निपुण, अष्टावक्र के पिता को भी आमंत्रित किया गया। जब बहुत विलंब हो गया और उनकी कोई खबर न आई, तब अष्टावक्र अपने पिता को देखने सभा में जा पहुंचे। अष्टावक्र को देखते ही, सभा में उपस्थित सभी सभाजन हँसने लगे और उनके आठ अंगों से टेढ़े देह का उपहास करने लगे। यह देखकर अष्टावक्र भी ज़ोर से हँसने लगे। उनकी यह विचित्र प्रतिक्रिया देख, राजा जनक ने उनसे उनकी हंसी का कारण पूछा, तब अष्टावक्र ने कहा, "आप इस सभा को विद्वानों की सभा कहते हैं, परंतु यहाँ तो सभी अज्ञानी घमंड में चूर हैं, मुझे तो ये चर्म के व्यापारी जान पड़ते हैं। ये सभी मेरी हड्डी, रक्त, मांस एवं चमड़ी देखकर मेरी योग्यता आंक रहे हैं। ये मुझपर नहीं, प्रभु की रचना पर हंस रहे हैं, उसका उपहास कर रहे हैं। जिस प्रकार, नदी के टेढ़े होने से जल टेढ़ा नहीं होता, उसी प्रकार शरीर के टेढ़े होने से, आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"

यह सब सुनकर राजा जनक अष्टावक्र के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरु मान, उनके मार्गदर्शन में ही तत्वज्ञान प्राप्त किया। अष्टावक्र और विदेहराज के संवाद "अष्टावक्र की गीता" के नाम से संकलित हैं जो आत्मा और ब्रह्म के दर्शन में मूर्धन्य स्थान रखते हैं।

**** प्रत्येक शुक्रवार को एक नई प्रेरक कथा पढ़िये।****

अधिक प्रेरक लघुकथाओं के लिए हमारा ऐप डाउनलोड करें : Vikram Samvant Hindu Calender